# वैदिक संस्कृति

18th lecture by-
Mamta Rani
[History depart.]
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA
21-04-2020.

Scanned with CamScanner

# वैदिक संस्कृति



[18th Lecture]

## संहिताओं के अतिरिक्त अन्य प्रमुख ग्रंथ एवं विषय :-

ग्रंथ — शाब्दिक व्याख्या (अर्थ) — विषय-वस्तु

① ब्राह्मण ग्रंथ - ब्रह्म - यज्ञ अर्थात् स्तुति के स्थान पर विधि प्रधान।
याज्ञिक विषयों के विधि-निषेधों की गद्यात्मक व्याख्या करने वाले ग्रंथ।

② आरण्यक ग्रंथ - अरण्य - वन अर्थात् वानप्रस्थियों द्वारा वनों में पठन-पाठन के निमित्त रचित ग्रंथ।
→ यज्ञ के स्थान पर आत्मा, मृत्यु, जीवन विषयक ज्ञान एवं आध्यात्मिक चिंतन को प्रधानता प्रदान करने वाले ग्रंथ।

③ उपनिषद् (उप - समीप + नि - निष्ठा + षद् - बैठना) अर्थात् गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठकर।
- सर्वंखल्विदं ब्रह्म अर्थात् परब्रह्म को ही सबकुछ मानकर अद्वैतवाद की स्थापना एवं यांत्रिक यज्ञों के स्थान पर ज्ञानयज्ञ के द्वारा सत्य की अन्वेषणा। उपनिषद् ब्रह्मविद्या एवं वैदिक साहित्य का अंतिम भाग होने से वेदांग भी कहलाते हैं।

④ वेदांग - वेदों के अंतिम भाग (अंग)।
वेद एवं वैदिक कर्मकाण्डों की सरल व्याख्या करने वाले ग्रंथ।

⑤ पुराण - अर्थात् प्राचीन आख्यान, इतिहास, विज्ञान, धर्म आदि का वर्णन।
- प्राचीन ज्ञान-विज्ञान विषयक जनसाधारण की व्यावहारिक गाथा में रचित ज्ञान के विश्व कोष रूपी ग्रंथ।

Scanned with CamScanner

⑥ स्मृति ग्रंथ - (स्मरण के आधार पर एक पीढ़ी से दूसरी को हस्तांतरित ज्ञान)
अर्थात् मनुष्य के संपूर्ण जीवन के क्रिया कलापों के संबंध में विधि निषेधों का प्रतिपादन।

- वैदिक आर्यों के धर्म एवं संस्कृति (वर्ण, जाति, आश्रम, पुरुषार्थ, विवाह, आदि) राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं अनुशासन प्रशासन विषयक नियम उपनियम के कानून के ग्रंथ।

## वेदांग :-

| क्रम | वेदांग | विषयवस्तु/व्याख्या |
|---|---|---|
| (1) | छन्द | छन्दबद्ध - वैदिक मंत्रों के छन्दों के नाम का बोध कराने वाला शास्त्र। |
| (2) | ज्योतिष | याज्ञिक अनुष्ठान करने के लिए शुभ मुहूर्त ज्ञात करने हेतु ग्रहों व नक्षत्रों के अध्ययन संबंधी विज्ञान (नक्षत्र विज्ञान)। |
| (3) | व्याकरण | नाम व धातुओं की रचना, शब्दों की मीमांसा करने वाला शास्त्र। |
| (4) | कल्प | वैदिक विधि विधानों (अनुष्ठानों) के नियमों का सूत्रों (छोटे - छोटे वाक्य) में प्रतिपादित। |
| (5) | शिक्षा | वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध स्वर क्रिया के बोधार्थ स्वर विज्ञान। |
| (6) | निरुक्त :- | शब्दों के अर्थों की उत्पत्ति का ज्ञान कराने वाला भाषा विज्ञान शास्त्र। |

Scanned with CamScanner

→ अथर्ववेद में एक स्थान पर विश द्वारा राजा के चुनाव का वर्णन मिलता है।

→ ऐतरेय ब्राह्मण में सर्वप्रथम चारों वर्णों के कर्तव्यों का वर्णन मिलता है।

→ छान्दोग्य उपनिषद में इतिहास पुराण को स्पष्ट रूप से पंचम कहा गया है।

→ शतपथ ब्राह्मण :- यहाँ हल की जुताई में संबंधित अनुष्ठानों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है।

→ याज्ञवल्क्य ब्राह्मण गार्गी संवाद का उल्लेख बृहदारण्यकोपनिषद में मिलता है।

→ सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में पुनर्जन्म का सिद्धांत दिखाई देता है।

→ अश्वमेध, वाजपेय, राजसूय आदि यज्ञों के विस्तृत अध्ययन से पता चलता है कि मूलत: उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ाना था। उत्तर वैदिक काल में ही मूर्तिपूजा का आरंभ हुआ। वैश्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वाजसनेयी संहिता में मिलता है। निस्क (सोने का सिक्का), शतमान (चाँदी का सिक्का), पाद, कृष्णल, आदि माप की भिन्न-भिन्न इकाइयाँ थी।

→ यम, नचिकेता और उनके बीच तीन वर प्राप्त करने की कहानी कठोपनिषद में वर्णित है। इस काल में गोत्र व्यवस्था स्थापित हुई। महर्षि याज्ञवल्क्य ने विदेह के राजा जनक के दरबार में हुए शास्त्रार्थ में अनेक प्रतिभावान विद्वानों को पराजित किया था, इनकी दो पत्नियाँ मैत्रेयी एवं कात्यायनी थी।

→ श्वेताम्बर उपनिषद रुद्र देवता को समर्पित है जिनमें उनके परवर्ती नाम शिव का उल्लेख हुआ है।

Scanned with CamScanner